ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-3* April-2017
Innovation The Research Concept

एड्स रोग तथा एड्स रोगियों का समाज में समायोजन

संगीता तोमर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कांधला,शामली

सारांश

कुछ वर्षों पहले एड्स महज एक खबर थी आज इससे खौफ जैसी हालत है। एच०आई०वी० नाम के वायरस से उपजने वाली इस मुसीबत की गिरफ्त में अधिकांश दुनिया आ चुकी है। गरीब और विकासशील देशों की हालत ज्यादा खराब है इन देशों में अनेक आर्थिक और सामाजिक कारणों से एड्स अपने भयावह रूप में उभरने को खड़ा है। हम अपने समाज या परिवारों में एच०आई०वी० संक्रमित मित्र या सम्बन्धी के लिये क्या करें, हमारा उनके प्रति क्या रूख हो। यह विचारणीय है पहली बड़ी जरूरत है हम संबंध और मित्रता को यथावत रखें। संक्रमित व्यक्ति के प्रति सकारात्मक रवैया हो। यह वह समय होता है जब आपके मित्र को आपकी जरूरत पहले से कहीं अधिक होती है। अनेक शारीरिक रोगों के कारण व्यक्ति में लगातार तनाव उत्पन्न हो जाते है। जिससे पारिवारिक अथवा सामाजिक समायोजन कठिन हो जाता है। इस कारण व्यक्ति मानसिक रूप से भी विकृत होने लगता है।

मुख्य शब्द : एड्स , एच० आई० वी०, चिकित्सा, मानव

प्रस्तावना

कुछ वैज्ञानिकों द्वारा कहा गया कि यह विषाणु बंदरों से मानव में 1926–46 के बीच आया है। किन्तु वर्तमान शोध से यह ज्ञात हुआ है कि यह विषाणु 1675 में आ गया था, यह विषाणु चिंपेंजी से मानव में आया था। किन्तु इसका फैलाव 1930 में हुआ।

एच० आई० वी० का अर्थ है हयूमन इम्यूनोडिफिशियन्सी वायरस

एच० – मानव
आई० – प्रतिरोधकता क्षमता ह्रास
वी० – वायरस

एड्स क्या है – एक्वायर्ड इम्यून डेफीशिएन्स सिण्ड्रोम

एड्स का अर्थ है

एक्वायर्ड

जो अनुवांशिक रूप से प्राप्त नहीं होता अपितु यह किसी अन्य व्यक्ति से प्राप्त होता है।

इम्यूनो डेफिशियन्सी

बीमारी पैदा करने वाले विषाणु के विरूद्ध लड़ने की रोगाणु प्रतिरोधक क्षमता कम होना।

सिन्ड्रोम

एक ही रोग या लक्षण नहीं अपितु रोगों या लक्षणों का समूह।

एच० आई० वी० तथा एड्स में अन्तर

एच० आई० वी० एक वायरस है जबकि एड्स इस वायरस के कारण से होने वाली बीमारी है। एच०आई०वी० जब किसी मनुष्य के शरीर में प्रवेश करता है तो लगभग 7–8 वर्ष तक या कभी–कभी इससे अधिक समय तक शरीर में सुस्त अवस्था में पड़ा रहता है। तथा व्यक्ति की रोगों से लड़ने की क्षमता को धीरे–धीरे कम करता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य स्वस्थ दिखता है किन्तु वह जाने अंजाने एच० आई० वी० वायरस से दूसरे स्वस्थ व्यक्तियों को संक्रमित कर सकता है।

एच० आई० वी०/एड्स से बचाव के लिए क्या करें?

एड्स से बचाव का कोई भी टीका नहीं है फिर भी जिम्मेदारी ओर समझ से काम लेकर और थोड़ी सी सावधानी बरतकर हम अपने को आसानी से इससे बचाये रख सकते है अर्थात्

"थोड़ी जानकारी– थोड़ी समझदारी,
एड्स पर विजय की तैयारी"

जिस तरह क्षय रोग, मस्तिष्क शोथ, आंत्र शोथ इत्यादि बीमारियां शरीर के क्षय विशेष में पाई जाती है उसी तरह क्या एड्स भी अंग विशेष का रोग है? वास्तव में एड्स किसी संस्थान अथवा अंग विशेष तक सीमित नहीं रहता, यह कई क्षयों को प्रभावित करता है। शुरू में तो एड्स रोग का विषाणु शरीर के प्रतिरक्षा क्षय को तहस–नहस करता है। इसके पश्चात् यह मस्तिष्क में पहुँचकर उसे भी संग्रस्त बना देता है। शरीर की रोग–प्रतिरोध शक्ति घट जाने से कई अवसरवादी रोग भी अपना डेरा जमा लेते हैं जिनसे मस्तिष्क के अलावा फेफड़े, पाचन–संस्थान, त्वचा इत्यादि रोगग्रस्त हो जाते हैं। इसलिये एड्स को केवल किसी एक अंग अथवा संस्थान का रोग नहीं कहा जा सकता। पूर्ण विकसित रोग शरीर के कई संस्थानों को रोगग्रस्त कर देता है। अंग–प्रत्यंग इसकी चपेट में आ जाते हैं, यहां तक कि कई मरीजों को एक विशेष प्रकार का त्वचा कैंसर (केपोसीज सारकोमा) हो जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि एड्स केवल एक रोग नहीं बल्कि कई रोगों का समूह है। साथ ही यह अन्य रोगों की अपेक्षा ज्यादा गंभीर और खतरनाक है। चूँकि इस रोग में दवाएँ ज्यादा असर नहीं करती, इसलिये इसे वर्तमान युग का महारोग भी कहा गया है।

एच.आई.वी. उस अर्थ में छूत की बीमारी नहीं है। जिसमें चेचक, टी०बी०, हैजा, प्लेग या खसरा है। यह मुख्यतः यौन रास्तों से और रक्त से रक्त का सम्पर्क होने से फैलती है। निम्नलिखित 6 प्रकार के माध्यमों द्वारा एड्स रोग का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है–

1. प्राकृतिक एवं अप्राकृतिक यौन संसर्गों द्वारा
2. इन्जेक्शनों द्वारा नशीली दवाईयां लेने से
3. रक्तदाताओं द्वारा
4. रक्त से बने उत्पादों द्वारा
5. रोगग्रस्त माताओं द्वारा (बच्चों में)
6. अन्य साधनों से।

रोगी रोग और चिकित्सा वैयक्तिक व्याधि होने के बावजूद किसी न किसी रूप में समाज से सम्बन्ध रखते हैं। भारतीय समाज में व्यक्ति के बीच सम्बन्धों का स्वरूप आत्मीयता से भरा होता है, विशेषतः परिवार में सभी सदस्य एक के लिए एक और एक सभी के लिए सिद्धान्त का परिपालन होता है। इसलिए किसी एक के भी रोगग्रस्त होने पर सम्पूर्ण परिवार प्रभावित होता है। परिवार ही नहीं रोगी के साथ सहकर्मी, मित्रगण, चिकित्सक व अन्य सदस्य भी प्रभावित होते हैं क्योंकि दैहिक विकारों के कारण व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पड़ता है ऐसे लोगों की बुद्धि–लब्धि में अन्तर आ जाता है। वे चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं। उनमें असुरक्षा व चिन्ता के कारण लक्षण भी पनपते है। समाज में पूरी तरह से समायोजन न हो सकने के कारण भविष्य के लिए चिन्तित रहता है। समाज में सभी स्थिति व भूमिकाओं का परस्पर तालमेल न बैठ पाने से व्यक्ति में असामान्यता दृष्टिगोचर होती है।

प्रकृति ने मानव को अकेले पैदा नहीं किया है। सहयोग और सामाजिकता की यह भावना सिर्फ मानव जगत में ही नहीं पायी जाती है। यहां तक कि पशु–पक्षियों में भी इस प्रकार की भावनाएं पायी जाती हैं। व्यक्ति समाज का आधार स्तम्भ है और व्यक्ति से ही इस विशाल समाज का निर्माण होता है इसलिए व्यक्ति को सामाजिक संगठन का मूल आधार माना जाता है। क्योंकि सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति जन्म से ही स्वेच्छा से इसकी सदस्यता स्वीकार करता है। प्रत्येक व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, अतः उसके प्रति समायोजन की भावनाएं होनी चाहिए, विशेषकर रोगियों के लिए तो अवश्य ही तभी वे अपने आप को समाज में समायोजित कर सकते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

इस अनुसंधान के लिए मैंने उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद, मेरठ, शामली, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर जिलों का चुनाव किया है।

अध्ययन पद्धति

सामाजिक वास्तविकता के अत्याधिक गतिशील जटिल एवं विस्तृत होने के कारण आज भी हमारे समक्ष अनुसंधान सम्बन्धी एक महान चुनौती प्रस्तुत है। जिसका सामना करने के लिए क्षेत्रों में उपलब्ध ज्ञान को प्रामणिक बनाते हुए पूर्णता की और आगे बढ़ना है सामाजिक अनुसंधान सामाजिक वास्तविकता के एवं विशिष्ट एवं परिभाषित क्षेत्र में उठाये गये प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की दिशा में क्रमबद्ध विज्ञानात्मक एवं उपयुक्त खोज हो।

अध्ययन का उद्देश्य

एड्स के रोगियों का समाज में समायोजन ज्ञात करना।

अध्ययन की उपकल्पना

एड्स के रोगियों का समाज के प्रति समायोजन भिन्न होगा।

आकार

यह अनुसंधान कार्य धन सीमा में रहते हुए केवल 120 इकाईयों का ही किया गया है।

लिंग

इस अनुसंधान के लिए पुरूष, महिलाओं एवं बच्चों दोनों ही वर्गो का चयन किया गया।

उम्र

यह अनुसंधान कार्य 5 वर्ष से 60 वर्ष से अधिक तक के प्रतिदर्शी पर किया गया।

आय

यह अनुसंधान कार्य, उच्च, मध्यम, एवं निम्न आय वर्ग के अन्तर्गत किया गया।

निदर्शन प्रतिविधि

निदर्शन प्रविधि अनुसंधान की वह प्रविधि है, जिसमें अनुसंधान विषय के अर्न्तगत सम्मिलित सम्पूर्ण जनसंख्या या इकाईयों में से सावधानी पूर्वक कुछ ऐसी इकाईयों को चुन लेना ही जो कि सम्पूर्ण की आधार भूत विशेषताओं का उचित प्रतिनिधित्व कर सकें। इस अध्ययन में इकाइयों का चयन करने के लिये उद्देश्यपूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है, क्योंकि एड्स रोगी सब स्थानों पर एक समान नहीं हैं।

उपकरण

इस अध्ययन में आंकड़ों को इकट्ठा करने के लिये अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

सार्थकता परीक्षण

सार्थकता परीक्षण हेतु काई टेस्ट का प्रयोग किया गया है। सूत्र निम्नानुसार है।

$$\text{काई वर्ग } \chi^2 = \Sigma\frac{(O-E)^2}{E}$$

अध्ययन का परिणाम

सारणी नं०– 1

रोगी के प्रति पड़ोसियों एवं जनता का व्यवहार

क्र० सं०	विकल्प	न्यादर्श सं० कुल योग	बच्चे प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	महिलाऐं प्रतिशत	कुल प्रतिशत	काई वर्ग χ^2
1.	बहुत अच्छा	–	–	–	–	–	22-14
2.	सामान्य	25	40%	14%	20%	20-8%	
3.	बुरा	73	&	82%	64%	60-8%	
4.	दया एवं सहानुभूति	22	60%	4%	16%	18-3%	
योग		**120**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	

अधिकांश 60.8% रोगियों के प्रति पड़ोसियों एवं जनता का व्यवहार अच्छा नहीं मिला। केवल 20.8% रोगी के प्रति ही पड़ोसियों एवं जनता का व्यवहार सामान्य पाया गया।

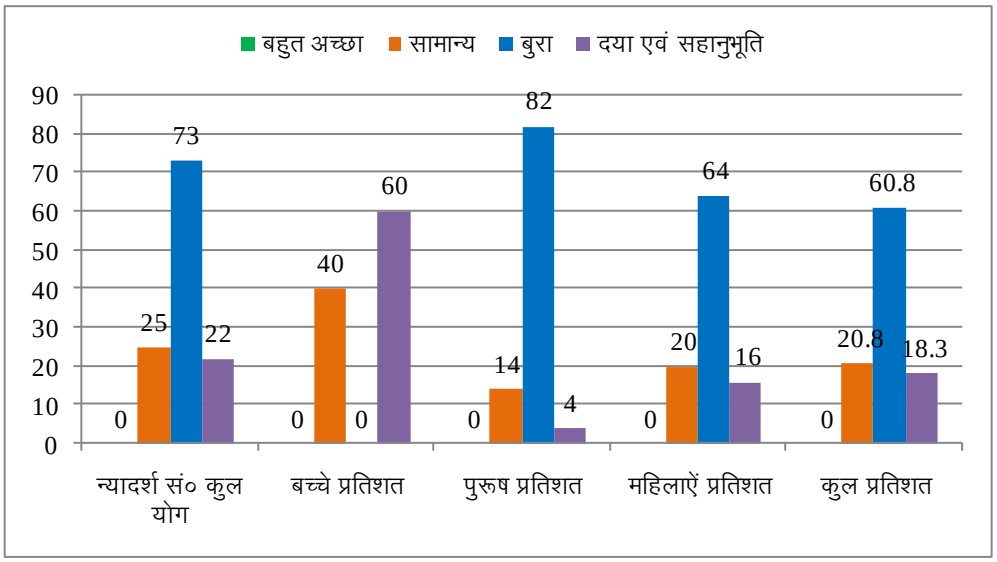

ग्राफ सं०–1: रोगी के प्रति पड़ोसियों एवं जनता का व्यवहार

सारणी नं०– 2

सामाजिक उत्सव में सम्मिलितता

क्र० सं०	विकल्प	न्यादर्श सं० कुल योग	बच्चे प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	महिलाऐं प्रतिशत	कुल प्रतिशत	काई वर्ग χ^2
1.	हाँ	25	10%	20%	26%	20-8%	2-26
2.	नहीं	95	90%	80%	74%	79-2%	
योग		**120**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	

$P < 0.01$ – सार्थकता स्तर पर

79.2% रोगियों द्वारा सामाजिक उत्सव में भाग नहीं लिया गया है। $P < 0.01$ के स्तर पर यह तालिका स्वीकृत की गयी है।

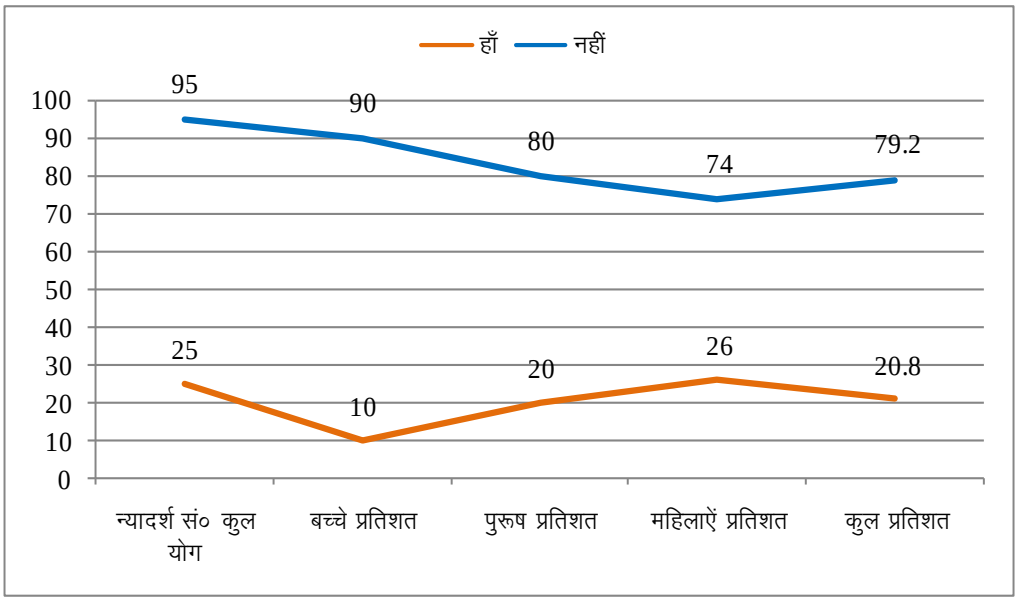

ग्राफ सं०–2: सामाजिक उत्सव में सम्मिलितता

सारणी नं०– 3

उत्सव में भाग लेने के बाद

क्र० सं०	विकल्प	न्यादर्श सं० कुल योग	बच्चे प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	महिलाऐं प्रतिशत	कुल प्रतिशत	काई वर्ग χ^2
1.	खुशी हुई	23	80%	6%	8%	19-2%	
2.	अकेलापन महसूस हुआ	16	5%	16%	14%	13-3%	
3.	उपेक्षापूर्ण व्यवहार	59	&	56%	62%	49-2%	51-44
4.	कुछ नहीं	22	15%	22%	16%	18-3%	
योग		**120**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	

P < 0.01 – सार्थकता स्तर पर

उत्सव कार्यक्रम में भाग लेने के बाद 49.2% रोगियों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार किया गया। केवल 19.2% रोगियों में खुशी पायी गयी। P < 0.01 के स्तर पर यह तालिका अस्वीकृत की गयी।

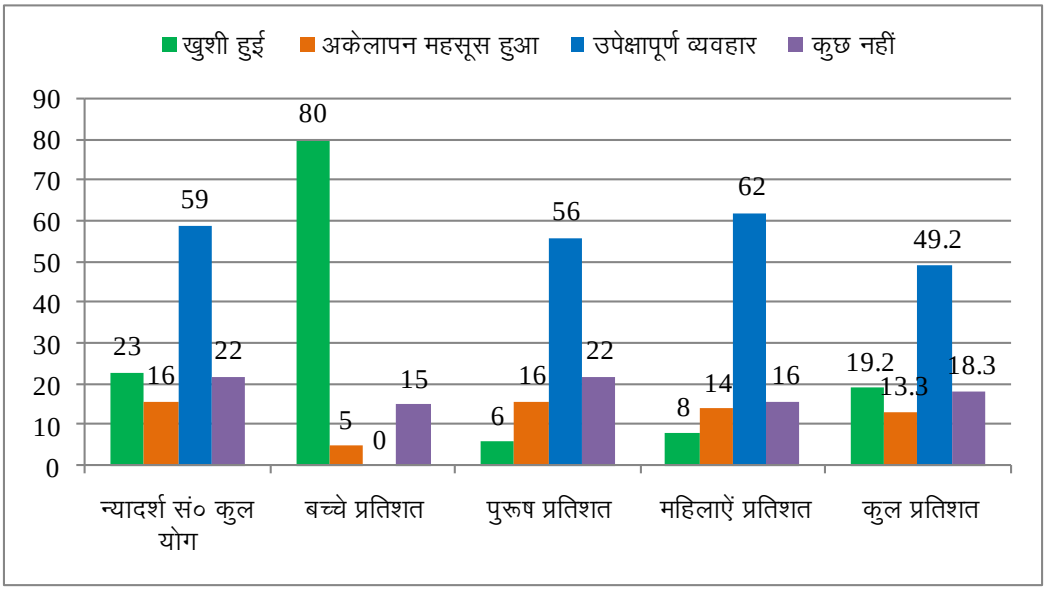

ग्राफ सं०–3: उत्सव में भाग लेने के बाद

सारणी नं०– 4
उत्सव में भाग लेने के कारण

क्र० सं०	विकल्प	न्यादर्श सं० कुल योग	बच्चे प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	महिलाऐं प्रतिशत	कुल प्रतिशत	काई वर्ग X^2
1.	मन में निराशा	9	10%	8%	6%	7-5%	58-232
2.	ज्यादा भीड़–भाड़ पसंद नहीं	10	&	4%	16%	8-3%	
3.	कमजोरी महसूस	41	90%	24%	22%	34-2%	
4.	अन्य कारण	60	&	64%	56%	50%	
योग		**120**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	

P < 0.01 – सार्थकता स्तर पर

34-2% रोगी द्वारा कमजोरी महसूस होने के कारण उत्सव में भाग नहीं लिया। 50% रोगियों ने उत्सव में भाग न लेने के अन्य कारण बताये जो कि (सा० प्रतिष्ठा, आर्थिक तंगी, शारीरिक सम्बन्धी परेशानियां) हैं। P < 0.01 के आधार पर यह तालिका अस्वीकृत पायी गयी।

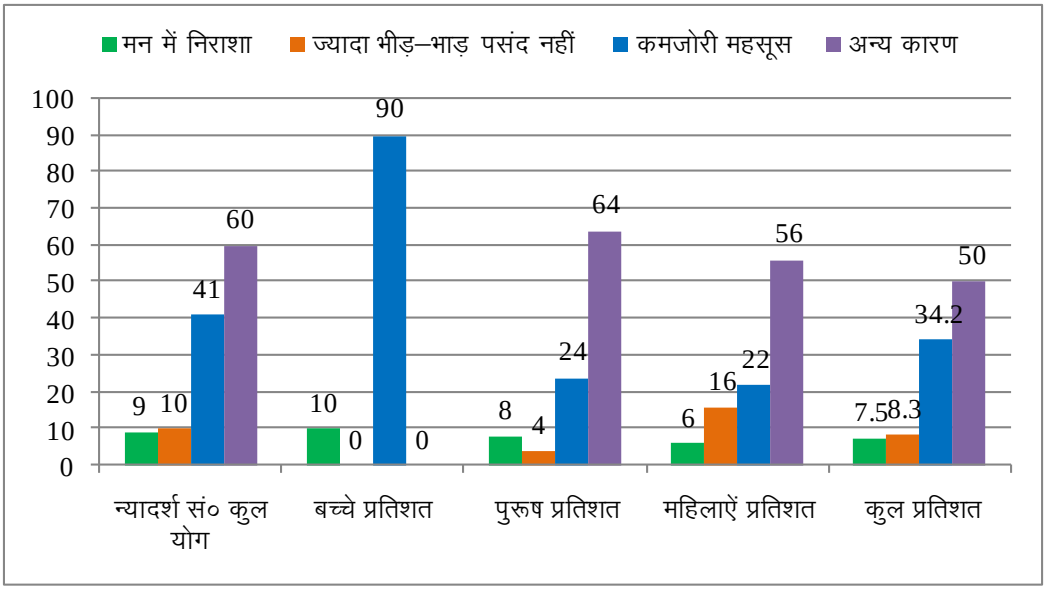

ग्राफ सं०–4: उत्सव में भाग लेने के कारण

सारणी नं०–5
समाज में स्थान

क्र० सं०	विकल्प	न्यादर्श सं० कुल योग	बच्चे प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	महिलाऐं प्रतिशत	कुल प्रतिशत	काई वर्ग χ^2
1.	उचित	–	–	–	–	–	35-35
2.	सामान्य	40	100%	24%	16%	33-3%	
3.	निम्न	80	&	76%	84%	66-7%	
योग		**120**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	

P < 0.01 – सार्थकता स्तर पर

उपरोक्त सारणी द्वारा स्पष्ट है कि 100% बच्चे 24% पुरूष एवं 16% महिलाओं का समाज में सामान्य स्थान पाया गया, जबकि 76% पुरूष और 84% महिलाओं का समाज में निम्न स्थान पाया गया। उपरोक्त तालिका का χ^2 का मान 35-35 आया है जो कि 4d.f. पर P < 0.01 का मान 13.277 है, अतः P < 0.01 के मान पर यह तालिका अस्वीकृत की गयी है। महिलाओं एवं पुरूषों की अपेक्षा समाज में बच्चों का व्यवहार सामान्य पाया गया है।

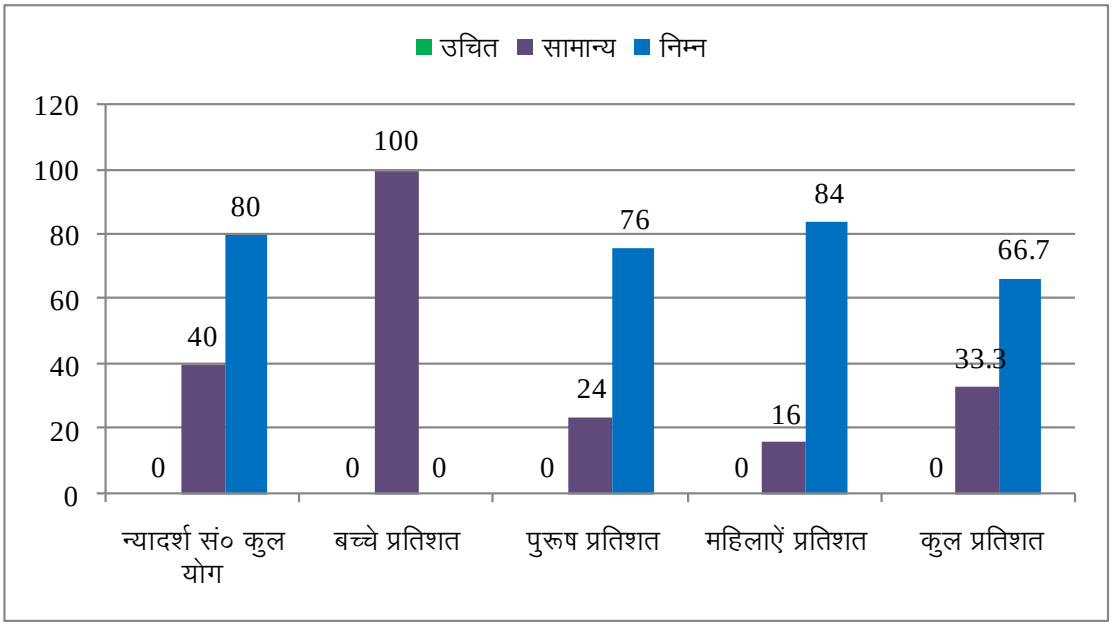

ग्राफ सं०–5: समाज में स्थान

अन्य अध्ययन हेतु सुझाव

1. आर्थिक स्थिति तथा शिक्षा का एड्स रोग पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
2. निम्न एवं उच्च वर्गों में एड्स का तुलनात्मक अध्ययन पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
3. एड्स और आयु और सम्बन्ध पर भी शोध कार्य कर सकते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में यह निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं कि ज्यादा रोगी 30 वर्ष से 60 वर्ष के परिवार के मुखिया हैं, जिनमें ट्रक ड्राइवर अत्यधिक हैं और अधिकांश रोगी समाज में कष्टप्रद स्थिति में हैं। बीमारी ज्ञात होने के बाद अधिकांश रोगियों के साथ पड़ोस एवं समाज का व्यवहार अच्छा नहीं रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता एवं शर्मा – भारतीय समाज व संस्कृति*
2. *भार्गव महेश – आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा– 4 –192*
3. *मुकर्जी, रविन्द्रनाथ – समाज मनोविज्ञान*
4. *मुकर्जी रविन्द्रनाथ – अनुसंधान एवं सांख्यिकी*
5. *शर्मा जे.डी. – सामान्य मनोविज्ञान*